भूमिका

माध्यम रूपान्तरण की प्रक्रिया को समझने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है क्योंकि आरंभिक तौर पर माध्यम रूपान्तरण को समझना थोड़ा जटिल है। मगर इस प्रक्रिया में लग जाने के बाद यह दिलचस्प भी हो जाता है। यही कारण है कि मैंने साहित्यिक कृतियों के फिल्म रूपांतरण से संबंधित शोध विषय का चुनाव किया। इस दौरान मुझे फिल्म जगत से जुड़ी कई हस्तियों के बारे में जानने-समझने का अवसर मिला तथा फिल्म निर्माण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता व लगन को भी जानने का मौका मिला। विषय-चयन के बाद मुझे अनुभव हुआ कि फिल्म निर्माण एक बेहद ही कठिन कार्य है विशेष कर साहित्यिक कृतियों पर फिल्म का निर्माण करना।

भारत में साहित्यिक कृतियों पर फिल्म रूपान्तरण का इतिहास उतना ही पुराना है जितना पुराना भारत के सिनेमा का इतिहास है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को तीन अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है। इसके प्रथम अध्याय 'साहित्य और सिनेमा का अंतर्संबंध' में साहित्य और सिनेमा के बीच संबंधों को गहराई से समझने की कोशिश की गयी है। प्रथम अध्याय को तीन उप अध्यायों में विभाजित किया गया है। इसका प्रथम उप अध्याय 'साहित्य और सिनेमा की रचना प्रक्रिया' है जिसमे साहित्य की निर्माण-प्रक्रिया में किन-किन तत्वों का योगदान होता है तथा फिल्म निर्माण में किन-किन तत्वों का योगदान है इन सभी तत्वों को समझने का प्रयास किया गया है। दूसरा उप अध्याय 'माध्यम रूपान्तरण के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्ष' है। इसमें साहित्यिक रचनाओं के फिल्म रूपान्तरण की सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक पक्षों की पड़ताल की गई है। इसके अंतर्गत रचना की ऐतिहासिकता, फिल्म की समय, सामाजिक उद्देश्य, परिवेश, पात्रो की संख्या, भाषा आदि पर विचार किया गया है। तृतीय उप अध्याय 'माध्यम रूपान्तरण की समस्या'नाम से है। इसमे साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्मों की सफलता-असफलता और लेखक-निर्देशक के विवाद के कारणों की खोज की गई है। इस उप अध्याय में कथा से पटकथा, परिवेश की समस्या, रचना की मूल संवेदना में आने वाली विभिन्न समस्याओं को समझने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का दूसरा अध्याय 'कोहबर की शर्त'और 'नदिया के पार'का तुलनात्मक अध्ययन है। इस अध्याय को चार उप अध्याय में बांटा गया है। इसका प्रथम उप अध्याय 'कथा से पटकथा' है जिसमें उपन्यास के कथानक से फिल्म के कथानक में किए गए परिवर्तनों को तथा इन परिवर्तनों से होने वाले प्रभावों को परखने की

कोशिश की गई है। इसमें उपन्यास के कथानक और फिल्म के दृश्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। दूसरा उप अध्याय 'पात्र एवं चरित्र'के नाम से है। इसमें उपन्यास तथा फिल्म के पात्रों का उपन्यास और फिल्म की प्रभावोत्पादकता के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। 'पात्र एवं चरित्र' के अंतर्गत पात्रों की प्रासंगिकता और व्यर्थता का सूक्ष्म निरीक्षण किया गया है। तीसरा उप अध्याय 'संवाद'के नाम से है। इसमें उपन्यास के संवादों की फिल्म की घटनाओं एवं संवादों से तुलना का आधार दर्शकों में संप्रेषणीयता है। इसमे संवादों का आकलन, उच्चारण की स्पष्टता, वाक्यों की सरलता तथा स्वर में उतार-चढ़ाव के आधार पर किया गया है। चौथा उप अध्याय 'परिवेश' नाम से है। इसमें उपन्यास के परिवेश से फिल्म के परिवेश की तुलना पात्रों के रहन-सहन, पहनावा, बोलचाल, खान-पान ग्रामीण परिवेश के आधार पर की गयी है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का तीसरा अध्याय 'कोहबर की शर्त'और 'नदिया के पार' का अभिव्यक्ति कौशल एवं सामर्थ्य: तुलनात्मक अध्ययन है। इसमें चार उप अध्याय हैं। पहला उप अध्याय 'बिंब विधान' है। इस में उपन्यास में आए बिंबों और फिल्म में प्रयोग किए गए बिंबों की सम्प्रेषण क्षमता का आकलन किया गया है। दूसरा उप अध्याय 'प्रतीक विधान' है। इस उप अध्याय में प्रतीकों के माध्यम से उपन्यासकार और फ़िल्मकार के अभिव्यक्ति कौशल का आकलन किया गया है। तीसरा उप अध्याय 'भाषा' है। इस में उपन्यास और फिल्म में प्रयोग किए गए विभिन्न भाषाओं के शब्दों एवं उन शब्दों की प्रभावोत्पादकता का आकलन किया गया है। चौथा उप अध्याय 'लोकोक्तियाँ एवं मुहावरा' है। इसमे उपन्यास और फिल्म में लोकोक्तियों एवं मुहावरों के द्वारा संप्रेषण कौशल का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अंत में प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का उपसंहार लिखा गया है।

प्रस्तुत शोध को पूर्ण करवाने में जिन लोगों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उनका मैं सदैव आभारी हूँ। इस कार्य में सबसे पहले मैं अपने शोध निर्देशक प्रो॰ कृष्ण कुमार सिंह सर का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ,जिन्होंने विषय चयन से लेकर शोध पूर्ण करने तक अपने निष्पक्ष और तर्कपूर्ण सुझावों के द्वारा सहायता की। इसके अलावा मैं उन सभी गुरुजनों के प्रति आभारी हूँ जिनका सहयोग प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में मिलता रहा। मैं डॉ॰ रूपेश कुमार सिंह सर के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होंने शोध प्रबंध के लिए मार्गदर्शन के साथ ही प्रोत्साहित कराते रहे। इसके बाद अपने आदरणीय माता-पिता और बड़े पिता स्व-अमरनाथ गुप्ता का मैं नम्र हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे इस योग्य बनाया जिनका आभार केवल शब्दों के द्वारा नहीं पूर्ण नहीं किया जा सकता। सुख-

दु:ख में कदम-से-कदम मिलाकर चलाने वाली पत्नी किरन गुप्ता और बड़े भाई देवेन्द्र कुमार गांधी तथा परिवार के सभी लोगों का आभारी हूँ जिनके सहयोग के बिना जिस उच्च शिक्षा के मुकाम पर आज मैं हूँ वो संभव नही हो पाता।

मित्रों की हमारे जीवन में विशेष जगह होती है। मित्र हमे कठिन समय में टूटने-बिखरने और निराश होने से बचाते हैं। मैं अपने ऐसे ही मित्रों जिसमें, अरविंद, नवीन, रमन, अरुण सोनी, विवेकानंद, नम्रता देवी चंद्रेश भाई, इंद्रेश, सद्दाम, प्रमुख हैं के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ। जिन्होंने पूरे शोध कार्य के दौरान मुझे संबल प्रदान किया।